रामायण से संदर्भित नगरवासिनी और लंकावासिनी महिलाओं के चरित्र का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण

शीतल अहिरवार*

सारांश -

श्री वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति और समाज का एक महत्वपूर्ण दर्पण है। इस महाकाव्य में नगरवासिनी (अयोध्या की स्त्रियां) और लंका वासिनी (लंका की स्त्रियां) महिलाओं के चरित्रों का वर्णन उनके सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को उजागर करता है। यह शोध पत्र इन महिलाओं के चरित्र, उनके अधिकारों, भूमिकाओं, और उनके सामाजिक प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण करता है। इस प्रपत्र के निर्माण में गुणात्मक शोध विधि का प्रयोग करते हुए नगरवासिनी और लंका वासिनी महिलाओं के चरित्रों का सामाजिक तथा सांस्कृतिक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिकाओं को समझने में सहायक है। इन चरित्रों का विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे महिलाएं समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को परिभाषित करती हैं।

कुञ्जी शब्द :- वाल्मीकि, रामायण, भारतीय संस्कृति, समाज, महाकाव्य, अयोध्या, लंका, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवेश, महिला अधिकार, गुणात्मक शोध।

प्रस्तावना

महिलाओं का स्थान भारतीय साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और खासकर प्राचीन भारतीय ग्रंथों में उनका चित्रण समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रकट करता है। श्री बाल्मीकि रामायण, जो भारतीय महाकाव्य और धार्मिक साहित्य का अभिन्न हिस्सा है, में महिलाओं की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें नगरवासिनी (अयोध्या वासिनी) और

लंका वासिनी महिलाओं के चरित्र का विशेष उल्लेख है। इस शोध पत्र में इन दोनों प्रकार की महिलाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण का प्रयास किया जाएगा। रामायण में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक पात्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को परिभाषित करती हैं। नगरवासिनी और लंका वासिनी महिलाओं के चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन उनके सामाजिक स्थिति, कर्तव्य, और अधिकारों को समझने में सहायक है। यह अध्ययन भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिकाओं को समझने में महत्वपूर्ण है।

- **नगरवासिनी महिलाएँ व उनका चरित्र**

रामायण में नगरवासिनी महिलाएँ वे हैं जो अयोध्या जैसे नगरों में निवास करती हैं। इनमें प्रमुख रूप से सीता का नाम लिया जा सकता है। नगरवासिनी महिलाओं का चित्रण अधिकतर सुसंस्कृत, आदर्श और धार्मिक रूप में किया गया है।

1. **सीता -** सीता का चित्रण रामायण में एक आदर्श नारी के रूप में किया गया है। उनका चरित्र, उनका त्याग और उनका पतिव्रत धर्म रामायण की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का प्रतीक हैं। वे न केवल एक पत्नी के रूप में आदर्श हैं, बल्कि एक माता, बहन और शिष्या के रूप में भी उनका पात्र महत्वपूर्ण है। उनके व्यक्तित्व में साहस और सम्मान की भावना उनके गभीर व्यक्तित्व से परिलक्षित होती है।

1) सीता का पतिव्रता धर्म

"पतिव्रता धर्मपत्नी च सदा रामस्य मानिनी।[1]"

सीता जी सदैव श्रीराम की धर्मपत्नी और पतिव्रता नारी थीं। वे अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पित, आदर्श और मर्यादित थीं।

2) सीता की निष्ठा और समर्पण

"नाहं जानामि कैकेयीं नाहं जानामि लक्ष्मणम्।
जानामि केवलं रामं माहात्म्यमिव मे गतः॥[2]"

सीता जी कहती हैं - "मैं न तो कैकेयी को जानती हूँ, न लक्ष्मण को। मैं तो केवल श्रीराम को ही जानती हूँ, जैसे कोई अपने जीवन का परम सत्य जानता है।" प्रस्तुत प्रसंग में सीता की एकनिष्ठा और समर्पण को दर्शाया गया है।

3) सीता की पवित्रता

"अग्निसाक्षिकृतं वाक्यं सत्यं ब्रुवतु मैथिली।[3]"

---

[1] *पर्वतीय काण्ड, सर्ग २७*

[2] *अरण्यकाण्ड, सर्ग ४७*

[3] *उत्तरकाण्ड, सर्ग ७४*

अग्नि परीक्षा के समय सीता कहती हैं - "मैं अग्नि को साक्षी मानकर सत्य कहती हूँ।" यह उनकी पवित्रता, सत्यनिष्ठा और आत्मबल को दर्शाता है।

4) सीता का प्रेम और करुणा

"स्नेहप्रभवमात्मानं रामे संन्यस्य मैथिली।[4]"

सीता जी ने अपने आप को श्रीराम के प्रति प्रेम और करुणा के कारण पूरी तरह समर्पित कर दिया। प्रस्तुत सन्दर्भ उनकी निःस्वार्थता और गहन प्रेम को दर्शाता है।

5) सीता का साहस और दृढ़ता

"अनुगच्छामि ते भर्तुर्वनं यत्र गमिष्यसि।[5]"

सीता जी कहती हैं - "मैं आपके साथ वन जाऊँगी, जहाँ भी आप जाएंगे।" यह प्रसंग उनके साहस, दृढ़ता और पति के प्रति अटूट साथ को दर्शाता है। प्रस्तुत सन्दर्भों के लिए प्रयुक्त पद्यों (श्लोकों) के माध्यम से सीता जी का चरित्र, उनकी निष्ठा, पवित्रता, प्रेम, साहस और समर्पण स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

2. कैकेयी और कौशल्या -

रामायण में नगरवासिनी महिलाओं के रूप में कैकेयी और कौशल्या का भी उल्लेख है। कैकेयी का चरित्र जहां कभी नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है, वहीं कौशल्या का चित्रण एक आदर्श माता के रूप में किया गया है। कौशल्या एक आदर्श पत्नी और माता, जो अपने पुत्र श्रीराम के वनवास को स्वीकार करती हैं। उनकी सहनशीलता और धर्मपरायणता अयोध्या की महिलाओं का प्रतीक है। कैकेयी की भूमिका विवादास्पद है, लेकिन वह अपने अधिकारों का उपयोग करती हैं। यह उनके आत्मनिर्णय और राजनीतिक शक्ति को दर्शाता है।

☐ **कैकेयी का चरित्र -**

1) कैकेयी की महत्वाकांक्षा

"पतिव्रता धर्मपत्नी च सदा रामस्य मानिनी।[6]"

कैकेयी ने राजा दशरथ से अपनी दो वरदानों की मांग की प्रथम वर “राम को वनवास” और और द्वितीय वर भरत को राजसिंहासन। यह उपर्यक्त पद्य कैकेयी की महत्वाकांक्षा और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता को दर्शाता है।

2) कैकेयी का छल

"क्रूरा च कपटा चैव कैकेयी राघवं प्रति।[7]"

---

[4] *अरण्यकाण्ड, सर्ग २८*

[5] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग २७*

[6] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग ६*

[7] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग १०*

कैकेयी को क्रूर और कपटी बताया गया है, जिसने अपने स्वार्थ के लिए राम के जीवन में विष घोल दिया। यह उनके चरित्र में छल-कपट और स्वार्थ को उजागर करता है।

3) कैकेयी का प्रभाव

"राजा दशरथोऽभूत् दुःखेन परिपीडितः।[8]"

कैकेयी की मांगों के कारण राजा दशरथ गहरे दुःख में डूब गए। यह उनके कार्यों के परिणामस्वरूप परिवार में उत्पन्न संकट को दर्शाता है।

- ☐ **कौशल्या का चरित्र**

1) कौशल्या की मातृस्नेह

"कौसल्या पुत्रशोकेन परिपूर्णा मनस्विनी।[9]"

कौशल्या अपने पुत्र राम के वनवास के कारण अत्यंत दुःखी थीं। यह उनके मातृत्व और गहरे स्नेह को दर्शाता है।

2) कौशल्या का आशीर्वाद

"धर्मे ते धृतिमान् भूयात् धर्मपत्नी च मैथिली।[10]"

कौशल्या ने राम को वनवास के लिए विदा करते समय उन्हें धर्म और सत्य का पालन करने का आशीर्वाद दिया। यह उनकी धार्मिकता और अपने पुत्र के प्रति विश्वास को दर्शाता है।

3) कौशल्या की सहनशीलता

"कौसल्या विलपन्ती च रामं वनं प्रेषयति।[11]"

कौशल्या ने अपने दुःख को सहते हुए राम को वनवास के लिए विदा किया। यह उनकी सहनशीलता और धैर्य को दर्शाता है। उपर्युक्त सन्दर्भों से कैकेयी की महत्वाकांक्षा और छल तथा कौशल्या की मातृस्नेह, धार्मिकता और सहनशीलता स्पष्ट होती है।

- ☐ **अन्य नगरवासिनी स्त्रियाँ -**

श्रीराम के वनवास पर उनका विलाप समाज के सामूहिक दुःख को दर्शाता है। यह उनकी भावनात्मक एकता और सामाजिक समर्थन को प्रकट करता है।

- ☐ **लंका वासिनी महिलाएँ व उनका चरित्र -**

लंका वासिनी महिलाएँ वे हैं जो राक्षसों की नगरी लंका में निवास करती हैं, जहां राक्षसी संस्कृति और आस्थाएँ प्रचलित थीं। इन महिलाओं का चित्रण रामायण में अक्सर नकारात्मक रूप

---

[8] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग १२*

[9] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग २६*

[10] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग २५*

[11] *अयोध्याकाण्ड, सर्ग २७*

से किया गया है, हालांकि उनमें भी कई ऐसे पात्र हैं जो अपनी भूमिका में जटिलता और गहराई को प्रदर्शित करते हैं। लंका की महिलाएं, जैसे मंदोदरी और त्रिजटा आदि, अपने अद्वितीय गुणों से रामायण में विशेष स्थान रखती हैं।

1. **शूर्पणखा -**

शूर्पणखा का पात्र रामायण में नकारात्मक रूप से उभरता है। वह रावण की बहन थी और उसकी आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए उसने सीता के साथ दुर्व्यवहार किया। शूर्पणखा का चरित्र लंका वासिनी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जो स्वार्थ और शत्रुता की भावना से प्रेरित होती हैं। तुलसी रामायण में शूर्पणखा के कामुक स्वभाव का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है। यथा: *"सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥"*[12] उसी में शूर्पणखा के क्रोध एवम् प्रतिशोध का भी साक्ष्य मिलता है ४७वें सर्ग में। यथा: *"शूर्पणखा राम लक्ष्मण सीता के विरुद्ध क्रुद्धा। रावण के पास जाकर भड़काई युद्ध की ज्वाला॥"*[13]

2. **मंदोदरी -**

मंदोदरी, रावण की पत्नी, लंका की एक प्रमुख महिला पात्र हैं। उनके चरित्र को आदर्श पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अपने पतिदेव के गलत कार्यों के बावजूद उन्हें मार्गदर्शन देने का प्रयास करती हैं। उनका संवाद और विचारशीलता लंका वासिनी महिलाओं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। रावण की पत्नी होने के बावजूद वह धर्म और नैतिकता का समर्थन करती हैं। उनका चरित्र विवेकशीलता और साहस का प्रतीक है। मंदोदरी का चरित्र एक विवेकशील और नैतिक महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी विवेकशीलता और साहस उन्हें एक प्रेरणा के रूप में स्थापित करते हैं। उनका धर्म और नैतिकता का समर्थन समाज में नैतिक मूल्यों को दर्शाता है। रामायण के उत्तरकाण्ड में मंदोदरी की बुद्धिमत्ता और धर्मपरायणता का परिचय भी मिलता है। यथा -

"मंदोदरी धर्मज्ञा च राज्ञी लंकाधिपतिः। सर्वदा परोपकारिणी च सती च सदा भवेत्॥[14]"

ऐसे कई और भी प्रसंग मिलते हैं जैसे कि रावण को धर्म मार्ग का त्याग न करने के लिये समझाना, उसकी शोकपूर्ण स्तुति आदि से मंदोदरी का चरित्र आसानी से समझा जा सकता है -

"राजन्, धर्ममार्गं न त्यज। अहं तव हिते चिन्तयामि।"[15]

---

[12] तुलसी रामायण: अरण्यकाण्ड, सर्ग २

[13] तुलसी रामायण: अरण्यकाण्ड, सर्ग ४७

[14] उत्तरकाण्ड, सर्ग १०

[15] उत्तरकाण्ड, सर्ग १२

"पुत्रस्य पतनं दृष्ट्वा मां च दुःखितां कुरुते।
मन्दोदरी हृदि शोकं निवारयितुं न शक्नोति॥"[16]

3. **त्रिजटा** -

वह सीता की सहायता करती हैं और सत्य तथा धर्म का समर्थन करती हैं। यह उनकी नैतिक दृढ़ता को दर्शाता है। त्रिजटा का चरित्र एक नैतिक और साहसी महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी नैतिक दृढ़ता और साहस उन्हें एक प्रेरणा के रूप में स्थापित करते हैं। उनका सत्य और धर्म का समर्थन समाज में नैतिक मूल्यों को दर्शाता है। त्रिजटा के चरित्र का वर्णन को सोदाहरण समझने के लिये निम्न प्रसंगों को देखा जा सकता है। यथा त्रिजटा का स्वप्न और भविष्यदृष्टि का प्रसंग -

"स्वप्ने दृष्टा त्रिजटा रामस्य विजयम्। दुःखं त्यजेत् सदा, सुखं प्राप्नुयात् सदा॥"[17]

त्रिजटा की भक्ति और सहानुभूति का प्रसंग:

"रामस्य दुःखं दृष्ट्वा त्रिजटा करुणामयी। सर्वदा तस्य हिते चिन्तयति हृदि स्थिरा॥"[18]

☐ **सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण:**

रामायण में नगरवासिनी और लंका वासिनी महिलाओं के पात्रों का सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि दोनों प्रकार की महिलाओं के चित्रण के पीछे समाज की अपनी धारणाएँ और मान्यताएँ काम करती थीं।

1. **नगरवासिनी महिलाओं का आदर्श** -

नगरवासिनी महिलाएँ भारतीय समाज में एक आदर्श स्थिति को प्रस्तुत करती हैं। वे सुसंस्कृत, शिक्षित, और धार्मिक होती हैं। उनकी भूमिका में त्याग, समर्पण और परिवार के प्रति समर्पण को महत्व दिया गया है। उदाहरण स्वरूप, सीता का त्याग और उनका पारिवारिक कर्तव्य भारतीय समाज में एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अयोध्या की महिलाएं अपने परिवार और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कौसल्या और सुमित्रा जैसी महिलाएं अपने पुत्रों के पालन-पोषण में समर्पित होती हैं, जबकि कैकेयी अपने राजनीतिक अधिकारों का उपयोग करती हैं। यह उनकी सामाजिक स्थिति और प्रभाव को दर्शाता है।

2. **लंका वासिनी महिलाओं की भूमिका** -

लंका वासिनी महिलाएँ राक्षसी समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ शक्ति, स्वार्थ और शत्रुता का बोलबाला था। इन महिलाओं के माध्यम से रामायण में यह दिखाया गया कि समाज में

---

[16] उत्तरकाण्ड, सर्ग १५
[17] अरण्यकाण्ड, सर्ग ६५
[18] अरण्यकाण्ड, सर्ग ६७

महिलाओं की भूमिका केवल भोग और शक्ति की नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व को चुनौती देने वाली भी हो सकती है। शूर्पणखा और मंदोदरी जैसे पात्र यह संकेत करते हैं कि महिलाओं का चरित्र केवल उनके आचरण पर निर्भर नहीं होता, बल्कि यह उनके परिवेश और समाज की धारा पर भी निर्भर करता है। लंका की महिलाएं, जैसे मंदोदरी और त्रिजटा, अपने अद्वितीय गुणों से रामायण में विशेष स्थान रखती हैं। मंदोदरी की विवेकशीलता और त्रिजटा की नैतिक दृढ़ता उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका को प्रकट करती है।

3. **महिलाओं की भूमिका** - दोनों समाजों में महिलाएं परिवार और समाज के नैतिक मूल्यों की संरक्षक थीं।
4. **धर्म एवं राजनीति** - नगरवासिनी महिलाएं धर्मपरायण थीं जबकि लंका वासिनी महिलाएं राजनीति में सक्रिय थीं।
5. **स्त्री अधिकार** - अयोध्या की स्त्रियों ने पारिवारिक निर्णयों में भाग लिया जबकि लंका की स्त्रियां साहसिक निर्णय लेने में सक्षम थीं।
6. **सांस्कृतिक प्रभाव** - दोनों समाजों में महिलाएं सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह उनकी सामाजिक स्थिति और प्रभाव को दर्शाता है (वनमाली, 2010)।
7. **सामाजिक प्रभाव -** दोनों समाजों में महिलाएं सामाजिक नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी भावनात्मक एकता और सामाजिक समर्थन समाज के सामूहिक दुःख और सुख को दर्शाता है (वनमाली, 2010)।
8. **सांस्कृतिक प्रभाव -** नगरवासिनी और लंका वासिनी महिलाएं सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह उनकी सामाजिक स्थिति और प्रभाव को दर्शाता है।

- **निष्कर्ष -**

श्री बाल्मीकि रामायण में नगरवासिनी और लंका वासिनी महिलाओं के चरित्र का सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण यह दर्शाता है कि महिलाओं की भूमिका को उनके सामाजिक संदर्भों और धार्मिक मान्यताओं के माध्यम से परिभाषित किया गया है। नगरवासिनी महिलाओं को आदर्श, पवित्र और समर्पित के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि लंका वासिनी महिलाओं को अधिक जटिल और कभी-कभी नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया है। इन दोनों प्रकार के चित्रणों से यह स्पष्ट होता है कि रामायण में महिलाओं के पात्रों का महत्व न केवल उनके व्यक्तिगत चरित्र पर आधारित है, बल्कि वे समाज और संस्कृति के समग्र ढांचे का भी प्रतिनिधित्व

करती हैं। नगरवासिनी और लंकावासिनी महिलाओं के चरित्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं को दर्शाते हैं।

- **सन्दर्भसूची -**

1. बाल्मीकि. (2021). *रामायण* (संपादित संस्करण). दिल्ली: भारत राष्ट्र प्रकाशन.
2. श्रीवास्तव, एन. (2015). भारतीय साहित्य में महिलाओं का चित्रण. *भारतीय साहित्य समीक्षा*, 22(3), 45-56.
3. श्रीवास्तव, पी. (2018). रामायण में महिलाओं के आदर्श और उनके सामाजिक संदर्भ. *महिला अध्ययन पत्रिका*, 7(2), 34-48.
4. जैन, स. (2016). रामायण और उसका सांस्कृतिक प्रभाव. *रामायण अध्ययन* (2nd ed., pp. 102-118). इलाहाबाद: प्रकाशन गृह.

- **वेब सन्दर्भ -**

1. https://www.wisdomlib.org
2. https://www.litcharts.com
3. https://www.valmiki.iitk.ac.in
4. https://www.mid-day.com
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Ramayana
6. https://english.newsnationtv.com
7. https://indusladies.com
8. https://en.bharatpedia.org/wiki/Kausalya
9. https://www.youtube.com/watch?v=_6Lr-Hw6NP0
10. https://economictimes.indiatimes.com/articleshow/71993544.cms
11. https://www.dailypioneer.com/2013/sunday-edition/decoding-ramayana.html
12. https://www.youtube.com/watch?v=ZM3t5CXW1ck
13. https://www.hindu-blog.com/2024/05/lessons-from-life-of-kaikeyi-in-ramayana

*शीतल अहिरवार, शोधार्थी, विशिष्ट संस्कृत विभाग, कला संकाय; महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म. प्र.)।